International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal, ISSN 2581-7795

चविट्टु नाटक: एक अनमोल कला

डॉ. रानी जास्मिन थॉमस एन. 1. 2. 3.
2. सहा.प्राध्यापिका,हिन्दी विभाग,
सैंट थॉमस कॉलेज (ऑटॉनमस),त्रिश्शूर
3. त्रिश्शूर, केरल, भारत .

सार

चविट्टु नाटकम या चविट्टु नाटक केरल की ऐतिहासिक और ईसाई परंपरा की एक अद्भुत कला है, जिसमें प्रांतीय कलाओं और संस्कृति के साथ यूरोपीय कला और संस्कृति का समन्वय हुआ है। यह शोध लेख चविट्टु नाटक की ऐतिहासिक उत्पत्ति, विशेषताएँ, प्रदर्शन, विषयवस्तु तथा समकालीन दशा का अध्ययन करता है। गुणात्मक शोध पद्धति के अंतर्गत पाठ्य विश्लेषण और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आधुनिकता, संस्थागत सहयोग की कमी, बजट का अभाव और लोगों में इसके संबंध में गलत धारणाएँ आदि के कारण यह कला मृत होने जा रही थी। प्रस्तुत लेख चविट्टु नाटक के महत्त्व और पहचान पर बल देते हुए उसके संरक्षण, प्रलेखन, शैक्षणिक सहभागिता आदि के माध्यम से इस अनमोला कला को देशीय स्तर पर पहचान दिलाने और उसे सुरक्षित रखने को रेखांकित करता है।

बीज शब्द: चविट्टु नाटक, केरल की संस्कृति में विदेशियों का प्रभाव, ईसाई पारंपरिक कला,
केरल के सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक रंगमंच, सास्कृतिक समन्वय की कला।

प्रस्तावना

केरल न केवल उसकी प्राकृतिक सुषमा के लिए ही प्रसिद्ध है, बल्कि यहाँ के लोग दूसरे राज्यों और देशों से आनेवाले लोगों के स्वागत और सम्मान के लिए भी जाना जाता है। यही नहीं वे अतिथि की अच्छाइयों को भी अपनाते हैं। समुद्री तट के किनारे स्थित और मसालों के लिए प्रसिद्ध होने के कारण कई देश-विदेश के लोगों ने इधर व्यापार के लिए आए थे। उन सबको यहाँ के लोगों ने मैत्री भाव से स्वागत किया। उन सबसे मिलते जुलते रहने के कारण उनके धर्म, भाषा, संस्कृति और आचार-व्यवहार से प्रभावित भी हुए। केरल में आए यहूदियों, इसाईयों, अरब के लोगों, यूरोपीयों के साथ साथ चीनियों से भी मिल जुलकर यहाँ की संस्कृति समृद्ध हुई है। इससे यहाँ के खाने -पीने में आचार -विचार में , रहन– सहन में और भाषा-कलाओं में कई प्रभाव आए हुए हैं। इस प्रकार केरल में आए पुर्तगालियों के प्रभाव से रूपायित एक अनन्य मनोरंजक कला है चविट्टु नाटकम्। ऐतिहासिक-सास्कृतिक महत्त्व होने पर भी इसका मंचन सीमित होता जा रहा है। यह अध्ययन इस कला की विकास यात्रा और सांस्कृतिक महत्त्व को समझने का प्रयास है।

साहित्य समीक्षा

केरल के पुरानी कलाओं में कथाकली, कूडियाट्टम और मोहिनि आट्टम जैसे कलारूपों पर विस्तृत अध्ययन मिलते हैं।लेकिन चविट्टु नाटक पर सीमित शोध-सामग्री उपलब्ध हैं। मलयालम में उपलब्ध कतिपय पुस्तकों में लेखकों ने इसके पुर्तगाली प्रभाव, केरल की प्राचीन ईसाई इतिहास, इसकी कथा और मंचीय प्रस्तुति पर प्रकाश डाला है। फिर भी देशीय स्तर पर इसकी महत्ता, संरक्षण और पहचान पर केंद्रित अध्ययन नाम मात्र है। यह शोध इस रिक्तता को भरने का प्रयास है।

उत्पत्ति और विकास

चविट्टु नाटक उत्भव 16वीं शती के अंत में हुआ था। पहली शती में में जब ईसाई धर्म का उदय हुआ था, तब से ही यहूदियों के साथ आए हुए ईसा के शिष्य संत थॉमस की वजह से केरल में भी इसाई धर्म का प्रचार हुआ था। जब 15 शती में पुर्तगाली केरल में आए तब उन्होंने देखा कि केरल के इसाई लोग युद्ध कला या कलरी के अभ्यास करते थे और शस्त्र धारण करते हुए घूमते थे। 16वीं शती के अंत में पुर्तगाली मिशनरियों ने उदयंपेरूर में एक सूनहदोस (धार्मिक सभा) का आयोजन किया जो उदयंपेरूर सूनहदोस[1] के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें प्राचीन इसाइयों से शस्त्रों और युद्ध कलाओं का प्रदर्शन को छोड़ने से सहमति प्राप्त की गई थी। लेकिन उनके ऊर्जा को सही दिशा देने और युद्ध कला के प्रति रुचि को सकारात्मक मार्ग दिखाने के लिए चविट्टु नाटकम जैसे जीवंत कला को रूपायित किया गया।

'चविट्टु नाटकम' का अर्थ है, ज़ोरदार कदमोंवाला नाटक। इसको संगीत और नृत्य के माध्यम से काठ के मंच पर शक्ति और ऊर्जा का उपयोग करके कदम को ज़ोर से रख रखकर प्रस्तुत किया जाता है। इसमें वीर रस की प्रधानता है[2] और इसका स्थायी भाव रौद्र होता है। इसमें युद्धों की मंचीय प्रस्तुति और वीर गीत मुख्य रूप से देख सकते हैं। इसकेलिए केरल का कलरीपयट्ट और गौण रूप में श्रृंगार की भी प्रधानता है। साथ ही साथ अन्य रस भी आ जाते हैं। यूरोप में प्रचरित

---

[1] उदयंपेरूर सूनहदोस, जून 20-26, 1599.
Zacharia, S., (1994). Udayamperoor Sunahadosinte Canonakal, Bharateeya Christhava Padana Kendram, Edamattam. Kerala, India

[2] चविट्टु नाटकम (ओरु चरित्र पठनम) – सेबीना राफी, अध्याय 1, प्रकाशन 1964, चतुर्थ संस्करण 2022

ऑपरा से लेकर केरल के कलरीपयट्ट (युद्ध कला) तक से भी यह प्रभावित है। संगीत की प्रधानता के कारण इसमें विशेष मुद्राएं भी हैं। इस प्रकार गीत, नृत्य और लडाई के साथ अभिनय किया जानेवाला संगीत नाटक है चविट्टु नाटक।

यह नाटक केरल के तटीय क्षेत्रों में – कोडुंगल्लूर से लेकर कोल्लम तक – काफी लोकप्रिय हो गया था। इसका प्रदर्शन रात को होता था। इसके कलाकार रंगीन और चमक-धमकवाली वेष-भूषा पहनते हैं जिससे दर्शक आकृष्ट हो जाते हैं। इसकी भाषा है प्राचीन मलयालम, जिसमें तमिल शब्दों के भरमार हैं। अभिनेता गीत गाते हुए अभिनय करते थे। इस नाटक के लिए करीब 40 रचनाएँ की गई हैं, जिनसे इसका साहित्य समृद्ध हुआ है। इसकी रचना हस्तलिखित 'चुवडियों' में की गई है। इसके अधिकांश लेखक भारतीय नामों से जाने जाते हैं।

वास्तव में यह कथाकली के समान महत्त्वपूर्ण कला है। डॉ. एस. के नायर ने केरल केलोकनृत्य पर अपने शोध प्रबंध में लिखा है-"चविट्टु नाटक एक शुद्ध संगीत नाटक है। यह कथाकली का एक ईसाई समकक्ष है और पश्चिम में लोकप्रिय ओपेरा की याद दिलाता है।"[3] इसमें कथकली की तरह मुद्राएँ हैं और नवरसों का अभिनय है। जिस प्रकार कथाकली में कलाकार को दीर्धकालीन प्रशिक्षण लेना पड़ता है उसी प्रकार इस महान कला भी प्रशिक्षण भी कई सालों के लिए करना पड़ता है। कलरी या युद्ध कला के प्रशिक्षण इसमें अनिवार्य अंग है। शरीर का लचक प्राप्त करने के लिए मालिश भी लेना पड़ता है। इसके कलाकार युद्धों के अभिनय में असली शस्त्रों का प्रयोग करते हैं। वीर रस प्रधान होने से इसमें युद्धों की प्रस्तुति होती रहती हैं।

[3] "Chavittu natakam is a pure music play. It is a Christian counterpart of Kathakali and reminds one of the operas popular in the west.", Dr. S.K. Nair, Thesis on folk dances of Kerala, Madras University.

कलाकार ताल और संगीत के साथ साथ शस्त्रों का तालात्मक प्रयोग और प्रदर्शन करते हैँ।इसके विभिन्न कदमों में 6 तरह का विभाजन है। प्रत्येक विभाग के अंतर्गत 12 कदम हैं। इस प्रकार यह वैज्ञानिक ढंग से विकसित कला रूप है। इसलिए इसको शास्त्रीय नृत्य के रूप में माना जाना चाहिए।

इस कला में गुरु को प्रमुख स्थान है। उन्हें इसके साहित्य, गीत, मुद्राएं, युद्धा और मालिश तक का ज्ञान होता है। गुरु को आशान बुलाया जाता है और वे अण्णावी के नाम से जाना जाते हैं। अभिनेता गाँव के प्रमुखों के सामने गुरु का शिष्यत्व प्राप्त करते हैं। इस प्रकार कठिन अभ्यास के बाद जब पहली बार मंच पर अभिनेता शुभारंभ करते हैं तब एक विशेष अनुष्ठान होता है। गुरु को दक्षिणा देने के बाद ही शिष्य मंच पर पहली बार प्रस्तुति करता है। यही नहीं, इसमें वेष-भूषा तैयार करनेवाले का भी दक्षिणा देकर नव कलाकार द्वारा आदर किया जाता है। इस नृत्य में पुरुष पात्रों के लिए तांडव और स्त्री पात्रों के लिए लास्य किया जाता है। पुराने ज़माने में पुरुष ही स्त्री की भूमिका अदा करता था। नए ज़माने मे स्त्री पात्रों की भूमिका स्त्रियों द्वारा ही किया जाने लगी है।

सांस्कृतिक समन्वय की कला

चविट्टु नाटक में पश्चिम और पूर्वी संस्कृति के समन्वय है। यूरोप के मिशनरियों, ज़हाज के कप्तानों, केरल के योद्धा के पैतृकवाले ईसाई लोगों द्वारा भारतीय नाट्य मंच को दिया गया योगदान है यह नाटक।"पश्चिम के ऑपरा केरल के प्राचीन कला सिद्धियों के साथ धुल मिलकर बना है चविट्टु नाटक"[4] पुर्तगाली मिशनियों ने

[4] चविट्टु नाटकम (ओरु चरित्र पठनम) – सेबीना राफी, पृ 95, प्रकाशन 1964, चतुर्थ संस्करण 2022

यूरोप के शास्त्रीय कला ओपरा के साथ यहाँ के कलरी पयट्टु और अन्य लोकप्रिय कलाओं तथा संगीत का समन्वय करके इस कला का सृजन किया था। इसका कतिपय मात्रा में साहित्य भी उपलब्ध हैं। इसके आधार पर ही इस कला का निर्देशन, प्रशिक्षण और प्रदर्शन होता है।

चविट्टु नाटक में सबसे पहले लिखा गया और सर्वाधिक प्रसिद्ध नाटक है- कारल्समान चरितम। इसके रचनाकार कोई अज्ञात पुर्तगाली मिशनरी है। उन्होंने यहाँ आने के बाद यहाँ की भाषा और संस्कृति सीख ली थी। साथ ही साथ यहाँ का नाम भी अपना लिया। इसकी कहानी फ्रांसीसी राजा चाल्समेइन पर आधारित है। इनके द्वारा जेरुसलेम पर विजय प्राप्त करने की वीरगाथा इसके माध्यम से दिखाया जाता है। इसका रचनाकार अज्ञात है। यह सबसे प्रथम और प्रसिद्ध नाटक है। इसके अलावा चिन्न तंबी (पुर्तगाली मिशनरी के भारतीय नाम) नाम पर रचित ब्रिजीना नाटक में नायिका के विश्वास जीवन संघर्ष और उस पर ईश्वर की कृपा को दिखाया जाता है। इसके अलावा वीर कुमार चरितम, दावीद विजयम, अल्लेशु नाटक, कत्रीना नाटक, जनोवा नाटक जैसे अनेक नाटक हैं, जिनमें से कुछ नाटक बाइबिल से और कुछ विश्वास से जुडे हैं। कुछ नाटकों में विश्वास के लिए जीवन कुर्बान करनेवाले लोगों की कहानी है तो ब्रजीना नाटक और प्लमेना जैसे नाटक भक्ति रस प्रधान हैं। किसी भी प्रकार का नाटक हो, उसमें मनोरंजन, सकारात्मकता और सकारात्मक ऊर्जा की अनुभूति आदि अवश्य होती है।

चविट्टु नाटक का नवोत्थान

पुर्तगालियों के जाने के बाद इस नाटक का प्रचार कम हो गया था। इस नाटक संबंध में श्रीमती सेबीना राफी ने एक वर्णनात्मक पुस्तक निकाली थी। इसके बाद मलयालम के कुछ आलोचकों ने इस पर विचार विमर्श किए। इस कला को पुर्नजीवित करने के लिए फॉ. वी पी जॉसफ द्वारा किए गए काम सराहनीय है। उन्होंने विस्तृत अध्ययन के बाद चविट्टु नाटक पर सर्व विज्ञान कोश की रचना की जिसे केरल फॉकलॉर अकादमी ने प्रकाशित किया। यही नहीं, इस नाटक पर उन्होंने कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं, जो इसके अध्ययन में अत्यधिक सहायक हैं। इसके फलस्वरूप केरल सरकार ने इसे स्कूल कला प्रतियोगिता का एक हिस्सा बनाया। चविट्टु नाटक के नवोत्थान के इस दौर में सामाजिक विषयों पर भी नाटक लिखने लगे। इनमें मछुआरों के जीवन पर आधारित तिरयुं तीरक्काट्टुम उल्लेखनीय है। सामाजिक पृष्ठभूमि में लिखित नाटकों में प्रसिद्ध हैं- धर्मिष्ठ, सत्यपाल, ज्ञान सुंदरी, जानकी आदि। कई नाटक समितियाँ भी इस क्षेत्र में काम करते हैं।

आज भी अधिकांश लोग इस नाटक से परिचित नहीं हैं। देशीय स्तर पर भी इसे लाया नहीं गया है। केरल और पाश्चात्य कलाओं की इस समन्वय की यह कला वास्तव में एक अनमोल निधि है। इसलिए इसका संवर्धन होना चाहिए और यह अद्भुत कला क्लासिकल कला के रूप में घोषित करने लायक है। श्रीमती सेबीना राफी ने भी इसका ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन करने के बाद इसके संबंध कहा है कि "चविट्टु नाटक एक शास्त्रीय कला रूप है।"[5] इस प्रकार इस अनमोल कला को उचित सम्मान और पहचान मिलना अनिवार्य है। तभी यह कला वास्तविक स्वरूप में अस्तित्व बनाए रखेगी और फली-फूलकर अनश्वर बन जाएगी।

[5] श्रीमती सेबीना राफी – चविट्टु नाटकम(ओरु चरित्र पठनम,)-पृ 169

निष्कर्ष

चविट्टु नाटक भारत के सांस्कृतिक विरासत के एक अनमोल कला है जिसमें केरल और यूरोप के अनन्य कलाओं का समन्वय हुआ है। इस कला में इतिहास, पुराण, संस्कृति, नृत्य आदि के अनमोल मोती पिरोए गए है। शास्त्रीय नृत्य के महत्वपूर्ण पहलूओं को समाहित करने की वजह से इसे लोक कला के रूप में नहीं शास्त्रीय नृत्य के रूप में पहचानना चाहिए।

भारतीय संस्कृति के एक महत्वपूर्ण कला होने से इसको विशेष पहचान मिलना आवश्यक है। इसके संरक्षण के लिए प्रलेखन, वित्तीय सहायता, कला-सांस्कृतिक समितियों और शैक्षणिक संस्थाओं का सहयोग अनिवार्य है। अत: इस अनमोल कला को सरकार द्वारा प्रोत्साहन देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चविट्टु नाटकम (ओरु चरित्र पठनम), सेबीना राफी, प्रणता बुक्स,कोच्ची।
2. चविट्टु नाटकम-साहित्यवुम संगीतवुम-फा.वी पी जॉसफ वलियवीट्टिल, केरल साहित्य अकादमी,तृश्शूर
3. फॉकलोरुम मलयाला नाटकवुम- डॉ. एल थॉमसकुट्टी, पूर्णा पब्लिकेशन्स, कॉष़िक्कॉड़।
4. चविट्टु नाटकम आट्टप्रकारम-फा वी.पी. जॉसफ वलिय वीट्टिल, प्रणता बुक्स, कोच्ची।
5. नेयतल तीरत्तिले संस्कारा पष़मकल- फा.वी पी जॉसफ वलियवीट्टिल, कृपासनम मीडिया मिनिस्ट्री।

6. चविट्टु नाटकम-सेबीना राफी, साहित्य प्रवर्तका कॉ ऑपरेटीव सोसाइटी लि., कॉट्टयम।
7. तीरदेशा कला निघंडु- फा.वी पी जॉसफ वलियवीट्टिल,केरल भाषा इंस्टिट्यूट, तिरुवरन्तपुरम।
8. चविट्टु नाटक विज्ञान कोशं- फा.वी पी जॉसफ वलियवीट्टिल, केरल फॉकलॉर अकादमी, कण्णूर।

******